गणेश चतुर्थी कथा — स्यमंतक उपाख्यान

Ganesh Chaturthi Katha — Syamantaka Retelling

Source: Vrataraja — 1897 Khemraj Sanskrit print, controlling account on physical scans 158–166. Also compared: Vrataraja — catalogued 1884 Shri Venkateshwar print, comparison witness; 1897 item metadata — edition identity and CC0 record.

Valkala's own retelling of the katha in Vrataraja, 1897 Khemraj print, Syamantakopakhyana 1–135; compiler attributes it to the Skanda Purana, not a transcription of the original text.

सूर्य और स्यमंतक मणि

KATHA 1–26

नंदिकेश्वर सनत्कुमार को गणेश चतुर्थी के व्रत की कथा सुनाते हैं। वे उसे संकट और अपवाद दूर करने वाला कहते हैं। सनत्कुमार पूछते हैं कि श्रीकृष्ण ने यह व्रत क्यों किया। उत्तर मिलता है कि कृष्ण पर लगा दोष हटाने के लिए यह स्मरण किया गया था। ये कथावाचक के धार्मिक फल-वचन हैं, किसी पाठक के लिए सुनिश्चित परिणाम नहीं।

कथा कृष्ण के अवतार को पृथ्वी का भार कम करने से जोड़ती है। जरासंध के आक्रमणों से बचने के लिए द्वारका का प्रसंग आता है। विश्वकर्मा से बनी नगरी, अनेक भवन, परिवार और पारिजात का वर्णन उसकी दिव्य भव्यता दिखाता है; इसे ऐतिहासिक नगर-गणना नहीं माना गया है। इसी नगर में सत्राजित रहते थे। वे समुद्र के किनारे सूर्य की आराधना करते हैं। सूर्य प्रसन्न होकर दिखाई देते हैं और सत्राजित उनका तेज, व्यापक रूप तथा जगत को प्रकाशित करने की शक्ति का स्तवन करते हैं।

सत्राजित स्यमंतक मणि माँगते हैं। सूर्य उन्हें मणि देते हुए प्रतिदिन सोना उत्पन्न होने और शुद्ध धारक की रक्षा का फल बताते हैं; अशुद्ध धारक के लिए विनाश की चेतावनी भी कथा में है। यह चमत्कारी वस्तु का धार्मिक वर्णन है, धन बनाने का साधन या मनुष्य की शुद्धता जाँचने का नियम नहीं। मणि पहनकर सत्राजित द्वारका आते हैं। उनके प्रकाश को देखकर लोग उन्हें सूर्य समझते हैं, लेकिन कृष्ण बताते हैं कि यह सूर्य की दी हुई मणि का तेज है।

Nandikeshvara tells Sanatkumara of a Ganesh Chaturthi vow, describing it as removing distress and false accusation. Asked why Krishna observed it, he says it was remembered to clear a charge against Krishna. These are the narrator's devotional benefit claims, not assured outcomes for readers.

The story connects Krishna's incarnation with relieving the earth's burden and introduces Dvaraka as refuge from Jarasandha's attacks. Vishvakarma's city, its many homes and families, and the parijata portray divine splendour, not an audited historical population. Satrajit worships the sun beside the sea. The sun appears, and Satrajit praises his radiance, universal form and illumination of the world.

Satrajit asks for Syamantaka. Granting the jewel, the sun describes daily production of gold and protection for a pure bearer, with destruction threatened for an impure bearer. This is a miraculous object's religious description, not a wealth-making method or a test of human purity. Wearing it, Satrajit enters Dvaraka. People mistake his radiance for the sun, but Krishna explains that it comes from the sun's gift.

आरोप, खोज और फिर संकट

KATHA 27–70

कृष्ण के मन में मणि पाने की इच्छा होती है, पर सत्राजित उसे नहीं देते। सत्राजित का भाई प्रसेन मणि पहनकर शिकार पर जाता है। उसे सिंह मार देता है; फिर जांबवान सिंह को मारकर मणि अपनी गुफा में ले जाते हैं। स्रोत प्रसेन की दशा को अपने शुद्धता-विचार से जोड़ता है; यह मृत व्यक्ति को दोष देने का हमारा निर्णय नहीं। प्रसेन के न लौटने पर कृष्ण के बारे में अफवाह फैलती है कि उन्होंने मणि के लिए उसकी हत्या की। कृष्ण तथ्य खोजने वन जाते हैं।

वे प्रसेन और उसके घोड़े का शव, सिंह के पदचिह्न, मरा हुआ सिंह और आगे जांबवान का मार्ग देखते हैं। साथियों को बाहर छोड़कर वे गुफा में प्रवेश करते हैं। वहाँ जांबवान की पुत्री बच्चे को मणि से खेलाते हुए प्रसेन, सिंह और जांबवान का क्रम बताती है। अनजान व्यक्ति को देखकर उसकी पुकार से जांबवान आते हैं। कृष्ण और जांबवान का दीर्घ युद्ध होता है; इस संस्करण में इक्कीस दिन कहे गए हैं। बाहर प्रतीक्षा कर रहे लोग कृष्ण को मृत समझकर लौटते हैं और शोक के संस्कार करते हैं।

अंत में जांबवान कृष्ण की शक्ति से उन्हें अपने आराध्य राम-विष्णु के रूप में पहचानते हैं। वे मणि और अपनी पुत्री जांबवती कृष्ण को देते हैं। कृष्ण लौटकर पूरी बात कहते हैं और मणि सत्राजित को लौटा देते हैं। पहला आरोप मिटता है। सत्राजित अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह कृष्ण से करते हैं। आगे अक्रूर और शतधन्वा से जुड़ा षड्यंत्र आता है। कृष्ण की अनुपस्थिति में शतधन्वा सत्राजित को मारकर मणि ले जाता है। सत्यभामा कृष्ण को सूचना देती हैं।

कृष्ण और बलराम पीछा करते हैं। शतधन्वा मणि अक्रूर को सौंप चुका होता है; उसका घोड़ा थककर मरता है और कृष्ण उसे मारते हैं, पर मणि नहीं मिलती। बलराम संदेह और क्रोध से कृष्ण से अलग होकर मिथिला चले जाते हैं। अक्रूर काशी में मणि को छिपाए रहते हैं और यज्ञ करते हैं। कृष्ण भाई से अलगाव और फिर उठे अपवाद से दुखी हैं। यह हिंसा और अविश्वास की कथा है, आरोप के आधार पर प्रतिशोध लेने का निर्देश नहीं।

Krishna wishes to obtain the jewel, but Satrajit does not give it. Satrajit's brother Prasena wears it hunting. A lion kills him, and Jambavan kills the lion and carries the jewel to his cave. The source interprets Prasena's condition through its purity beliefs; we do not endorse blame of the deceased. When Prasena fails to return, a rumour accuses Krishna of murder for the jewel. Krishna enters the forest to find the facts.

He finds Prasena and his horse dead, follows the lion's tracks to its body, then Jambavan's trail. Leaving his companions outside, he enters the cave. Jambavan's daughter entertains a child with the jewel, describing the sequence of Prasena, lion and Jambavan. Her alarm at the stranger brings Jambavan. The prolonged fight lasts twenty-one days in this telling. The waiting companions eventually return believing Krishna dead and perform mourning rites.

Recognizing his worshipped Rama-Vishnu in Krishna's strength, Jambavan gives him the jewel and his daughter Jambavati. Krishna returns, explains and restores the jewel to Satrajit, clearing the first charge.

Satrajit gives Satyabhama in marriage to Krishna. A later plot involves Akrura and Shatadhanva. In Krishna's absence Shatadhanva kills Satrajit and takes the jewel. Satyabhama informs Krishna.

Krishna and Balarama pursue him. Shatadhanva has entrusted the jewel to Akrura; his exhausted horse dies, and Krishna kills him, but no jewel is found. Suspicious and angry, Balarama separates from Krishna and goes to Mithila. Akrura keeps the jewel hidden in Kashi and performs sacrifices. Krishna grieves over his brother's estrangement and renewed accusation. This narrative of violence and mistrust is not advice to retaliate on an accusation.

नारद का उत्तर और चंद्रमा का प्रसंग

KATHA 71–100

नारद कृष्ण के दुख का कारण पूछते हैं। कृष्ण अपवाद और बलराम के अलग होने की बात कहते हैं। नारद इसे भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चंद्रमा देखने से जोड़ते हैं। कृष्ण कारण पूछते हैं, तब गणेश और चंद्रमा की कथा सुनाई जाती है। यह स्रोत की धार्मिक कारण-व्याख्या है; वास्तविक अन्याय के लिए चंद्रमा देखने वाले को दोष नहीं दिया जा सकता।

कथा में ब्रह्मा गणेश का स्तवन करते हैं। गणेश सिद्धियों और सृष्टि के कार्य से जुड़ा वर देते हैं, और मोदक का प्रसंग आता है। आगे चंद्रमा गणेश के रूप को देखकर हँसते हैं। गणेश क्रुद्ध होकर कहते हैं कि चंद्रमा को देखने वालों पर अपवाद लगेगा। भय से चंद्रमा छिप जाते हैं। देवता ब्रह्मा के पास सहायता माँगने आते हैं। ब्रह्मा बताते हैं कि यह संकट गणेश की प्रसन्नता से ही मिटेगा।

ब्रह्मा गणेश की आराधना का वर्णन करते हैं: भाद्रपद की शुक्ल चतुर्थी, मिठाई, प्रतिमा और दान जैसे विधान स्रोत में आते हैं। यह कथा में देवताओं को दी गई सलाह का सार है, पाठक के लिए खरीदी, निश्चित सामग्री या पूरी पूजा का निर्देश नहीं। देवता इसी समाधान का संदेश लेकर चंद्रमा की ओर जाते हैं। कथा आगे चंद्रमा की विनती और गणेश के उत्तर तक जारी रहती है; यहीं समाप्त नहीं होती।

Narada asks why Krishna is distressed. Krishna describes the accusation and Balarama's departure. Narada associates this with seeing the moon on Bhadrapada Shukla Chaturthi. Asked why, he recounts Ganesh and the moon. This is the source's religious explanation; someone suffering actual injustice cannot be blamed for looking at the moon.

Brahma praises Ganesh, who grants a boon connected with siddhis and creation; modaka also enters the account. Later the moon laughs at Ganesh's appearance. Angered, Ganesh says that people seeing the moon will incur accusations. The frightened moon hides. The gods seek Brahma's help, and he says only Ganesh's favour can resolve the difficulty.

Brahma describes worship of Ganesh on the bright fourth of Bhadrapada, mentioning sweets, an image and gifts. This summarizes advice to characters in the story, not a reader's shopping list, fixed materials or complete worship instructions. The gods carry this solution to the moon. The account continues through the moon's appeal and Ganesh's answer; it does not end here.

प्रार्थना, शाप की सीमा और समापन

KATHA 101–135

देवताओं का संदेश सुनकर चंद्रमा गणेश की आराधना करते हैं। गणेश प्रकट होते हैं। चंद्रमा उन्हें देवताओं के स्वामी और सृष्टि, पालन तथा अंत के अधिष्ठाता कहकर स्तुति करते हैं। वे क्षमा माँगते हैं और कहते हैं कि भय और लज्जा ने उन्हें दबा दिया है। गणेश वर देते हुए शाप को सीमित करते हैं। कथा भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दर्शन के लिए अपवाद की बात रखती है और शुक्ल द्वितीया के दर्शन से जुड़े बचाव का कथन भी करती है। यह चंद्र-दर्शन का डर या अनिवार्य बचाव-कार्य पाठक पर लागू नहीं करता।

इसके बाद स्रोत में मासिक कृष्ण चतुर्थी, गणेश और रोहिणी सहित चंद्रमा की पूजा, दूर्वा, मोदक, प्रतिमा, वस्त्र, पात्र, दान, आहार-संयम और अग्नि-समर्पण का वर्णन आता है। इच्छा-पूर्ति और दोष दूर होने के फल भी कहे जाते हैं। पूरे चयन के इस अंतिम उपदेश का सार यहाँ रखा गया है, पर मंत्र, अनिवार्य संख्या, नमक छोड़ने या अन्य कठोर नियमों को सार्वजनिक अभ्यास में नहीं बदला गया है। यह जन्मोत्सव, मासिक व्रत और स्थानीय कैलेंडर के हर नियम को एक समान नहीं करता।

नारद कृष्ण को इस आराधना का स्मरण कराते हैं। कृष्ण उसका पालन करते हैं और कथावाचक उनके अपवाद-मुक्त होने का वर्णन करते हैं। अंत में स्यमंतक और चंद्रमा के प्रसंग को सुनने से दोष और मन का कष्ट मिटने तथा कार्य सफल होने के धार्मिक फल-वचन आते हैं। ये आस्था के कथन हैं, बदनामी मिटने की गारंटी, न्याय-प्रक्रिया का विकल्प या पीड़ित को दोष देने का नियम नहीं। इसी के बाद नंदिकेश्वर–सनत्कुमार संवाद का स्यमंतक उपाख्यान समाप्त होता है। इस चयन में अक्रूर से मणि वापस मिलने या बलराम के लौटने का अतिरिक्त दृश्य नहीं है; दूसरे ग्रंथ से उसे यहाँ नहीं जोड़ा गया है।

Hearing the gods' message, the moon worships Ganesh, who appears. The moon praises him as lord of the gods and presiding over creation, preservation and dissolution, asking forgiveness for fear and shame. Granting a boon, Ganesh limits the curse. The account retains an accusation claim for sight on Bhadrapada Shukla Chaturthi and a protective claim associated with sight on the bright second. This does not impose fear of moon-sighting or an obligatory protective act on readers.

The source then describes monthly dark-fortnight Chaturthi, worship of Ganesh and the moon with Rohini, durva, modaka, images, clothes, vessels, gifts, dietary restraint and fire offerings. It states wishes being fulfilled and faults removed. This final discourse is included in the condensed account, but its formulas, compulsory counts, salt restriction and other severe rules are not converted into public practice instructions. The birth festival, monthly vow and every local calendar rule are not treated as identical.

Narada reminds Krishna of the worship. Krishna observes it and the narrator says his accusation is cleared. Closing benefit statements commend hearing the Syamantaka and moon account to remove faults and mental distress and achieve one's tasks. These are devotional claims, not guarantees of clearing defamation, substitutes for justice or grounds to blame victims. The Nandikeshvara–Sanatkumara Syamantaka account ends here. It contains no additional scene of Akrura returning the jewel or Balarama coming back; another scripture's ending is not imported.